श्री गोरखनाथ चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री गोरखनाथ चालीसा

प्रकार	चालीसा
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	नाथ
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 98–102
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

गणपति गिरजा पुत्र को, सुमिरूँ बारम्बार ।

gaṇapati girajā putra ko, sumirū bārambār |

हाथ जोड़ विनती करूँ, शारद नाम आधार ॥

hāth joṛ vinatī karū, śārad nām ādhār ||

जय जय गोरख नाथ अविनासी ।

jay jay gorakh nāth avināsī |

कृपा करो गुरु देव प्रकाशी ॥ १ ॥

kṛpā karo guru dev prakāśī || 1 ||

जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी ।

jay jay jay gorakh guṇ jñānī |

इच्छा रूप योगी वरदानी ॥ २ ॥

icchā rūp yogī varadānī || 2 ||

अलख निरंजन तुम्हरो नामा ।

alakh niraṃjan tumharo nāmā |

सदा करो भक्तन हित कामा ॥ ३ ॥

sadā karo bhaktan hit kāmā || 3 ||

नाम तुम्हारा जो कोई गावे ।

nām tumhārā jo koī gāve |

जन्म जन्म के दुःख मिट जावे ॥ ४ ॥

janma janma ke duḥkh miṭ jāve || 4 ||

जो कोई गोरख नाम सुनावे ।

jo koī gorakh nām sunāve |

भूत पिशाच निकट नहीं आवे ॥ ५ ॥

bhūt piśāc nikaṭ nahīṃ āve || 5 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

ज्ञान तुम्हारा योग से पावे ।

jñān tumhārā yog se pāve |

रूप तुम्हारा लख्या न जावे ॥ ६ ॥

rūp tumhārā lakhyā na jāve || 6 ||

निराकार तुम हो निर्वाणी ।

nirākār tum ho nirvāṇī |

महिमा तुम्हारी वेद न जानी ॥ ७ ॥

mahimā tumhārī ved na jānī || 7 ||

घट घट के तुम अन्तर्यामी ।

ghaṭ ghaṭ ke tum antaryāmī |

सिद्ध चौरासी करे प्रणामी ॥ ८ ॥

siddha caurāsī kare praṇāmī || 8 ||

भस्म अङ्ग गल नाद विराजे ।

bhasma aṅga gal nād virāje |

जटा शीश अति सुन्दर साजे ॥ ९ ॥

jaṭā śīś ati sundar sāje || 9 ||

तुम बिन देव और नहीं दूजा ।

tum bin dev aur nahīṃ dūjā |

देव मुनि जन करते पूजा ॥ १० ॥

dev muni jan karate pūjā || 10 ||

चिदानन्द सन्तन हितकारी ।

cidānanda santan hitakārī |

मंगल करण अमंगल हारी ॥ ११ ॥

maṃgal karaṇ amaṃgal hārī || 11 ||

पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी ।

pūrṇa brahma sakal ghaṭ vāsī |

गोरख नाथ सकल प्रकाशी ॥ १२ ॥

gorakh nāth sakal prakāśī || 12 ||

गोरख गोरख जो कोई ध्यावे ।

gorakh gorakh jo koī dhyāve |

ब्रह्म रूप के दर्शन पावे ॥ १३ ॥

brahma rūp ke darśan pāve || 13 ||

शंकर रूप धर डमरू बाजे ।

śaṃkar rūp dhar ḍamarū bāje |

कानन कुण्डल सुन्दर साजे ॥ १४ ॥

kānan kuṇḍal sundar sāje || 14 ||

नित्यानन्द है नाम तुम्हारा ।

nityānanda hai nām tumhārā |

असुर मार भक्तन रखवारा ॥ १५ ॥

asur mār bhaktan rakhavārā || 15 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

अति विशाल है रूप तुम्हारा ।

ati viśāl hai rūp tumhārā |

सुर नर मुनि जन पावें न पारा ॥ १६ ॥

sur nar muni jan pāveṃ na pārā || 16 ||

दीन बन्धु दीनन हितकारी ।

dīn bandhu dīnan hitakārī |

हरो पाप हर शरण तुम्हारी ॥ १७ ॥

haro pāp har śaraṇ tumhārī || 17 ||

योग युक्ति में हो प्रकाशा ।

yog yukti meṃ ho prakāśā |

सदा करो सन्तन तन वासा ॥ १८ ॥

sadā karo santan tan vāsā || 18 ||

प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा ।

prātaḥkāl le nām tumhārā |

सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा ॥ १९ ॥

siddhi baṛhe aru yog pracārā || 19 ||

हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले ।

haṭh haṭh haṭh gorakṣa haṭhīle |

मार मार वैरी के कीले ॥ २० ॥

mār mār vairī ke kīle || 20 ||

चल चल चल गोरख विकराला ।

cal cal cal gorakh vikarālā |

दुश्मन मार करो बेहाला ॥ २१ ॥

duśman mār karo behālā || 21 ||

जय जय जय गोरख अविनाशी ।

jay jay jay gorakh avināśī |

अपने जन की हरो चौरासी ॥ २२ ॥

apane jan kī haro caurāsī || 22 ||

अचल अगम है गोरख योगी ।

acal agam hai gorakh yogī |

सिद्धि देवो हरो रस भोगी ॥ २३ ॥

siddhi devo haro ras bhogī || 23 ||

काटो मार्ग यम को तुम आई ।

kāṭo mārga yam ko tum āī |

तुम बिन मेरा कौन सहाई ॥ २४ ॥

tum bin merā kaun sahāī || 24 ||

अजर अमर है तुम्हरी देहा ।

ajar amar hai tumharī dehā |

सनकादिक सब जोरहिं नेहा ॥ २५ ॥

sanakādik sab jorahiṃ nehā || 25 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा ।

koṭin ravi sam tej tumhārā |

है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ २६ ॥

hai prasiddha jagat ujiyārā || 26 ||

योगी लखे तुम्हारी माया ।

yogī lakhe tumhārī māyā |

पार ब्रह्म से ध्यान लगाया ॥ २७ ॥

pār brahma se dhyān lagāyā || 27 ||

ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे ।

dhyān tumhārā jo koī lāve |

अष्टसिद्धि नव निधि घर पावे ॥ २८ ॥

aṣṭasiddhi nav nidhi ghar pāve || 28 ||

शिव गोरख है नाम तुम्हारा ।

śiv gorakh hai nām tumhārā |

पापी दुष्ट अधम को तारा ॥ २९ ॥

pāpī duṣṭa adham ko tārā || 29 ||

अगम अगोचर निर्भय नाथा ।

agam agocar nirbhay nāthā |

सदा रहो सन्तन के साथा ॥ ३० ॥

sadā raho santan ke sāthā || 30 ||

शंकर रूप अवतार तुम्हारा ।

śaṃkar rūp avatār tumhārā |

गोपीचन्द भरथरी को तारा ॥ ३१ ॥

gopīcanda bharatharī ko tārā || 31 ||

सुन लीजो प्रभु अरज हमारी ।

sun lījo prabhu araj hamārī |

कृपासिन्धु योगी ब्रह्मचारी ॥ ३२ ॥

kṛpāsindhu yogī brahmacārī || 32 ||

पूर्ण आस दास की कीजे ।

pūrṇa ās dās kī kīje |

सेवक जान ज्ञान को दीजे ॥ ३३ ॥

sevak jān jñān ko dīje || 33 ||

पतित पावन अधम अधारा ।

patit pāvan adham adhārā |

तिनके हेतु तुम लेत अवतारा ॥ ३४ ॥

tinake hetu tum let avatārā || 34 ||

अलख निरंजन नाम तुम्हारा ।

alakh niraṃjan nām tumhārā |

अगम पन्थ जिन योग प्रचारा ॥ ३५ ॥

agam pantha jin yog pracārā || 35 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

जय जय जय गोरख भगवाना ।

jay jay jay gorakh bhagavānā |

सदा करो भक्तन कल्याना ॥ ३६ ॥

sadā karo bhaktan kalyānā || 36 ||

जय जय जय गोरख अविनासी ।

jay jay jay gorakh avināsī |

सेवा करें सिद्ध चौरासी ॥ ३७ ॥

sevā kareṃ siddha caurāsī || 37 ||

जो ये पढ़हि गोरख चालीसा ।

jo ye paṛhahi gorakh cālīsā |

होय सिद्ध साक्षी जगदीशा ॥ ३८ ॥

hoy siddha sākṣī jagadīśā || 38 ||

हाथ जोड़कर ध्यान लगावे ।

hāth joṛakar dhyān lagāve |

और श्रद्धा से भेंट चढ़ावे ॥ ३९ ॥

aur śraddhā se bheṃṭ caṛhāve || 39 ||

बारह पाठ पढ़े नित जोई ।

bārah pāṭh paṛhe nit joī |

मनोकामना पूर्ण होई ॥ ४० ॥

manokāmanā pūrṇa hoī || 40 ||

सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ ।

sune sunāve prem vaś, pūje apane hāth |

मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरखनाथ ॥

man icchā sab kāmanā, pūre gorakhanāth ||

अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार ।

agam agocar nāth tum, pārabrahma avatār |

कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार ॥

kānan kuṇḍal sir jaṭā, aṃg vibhūti apār ||

सिद्ध पुरुष योगेश्वरो, दो मुझको उपदेश ।

siddha puruṣ yogeśvaro, do mujhako upadeś |

हर समय सेवा करूं, सुबह शाम आदेश ॥

har samay sevā karūṃ, subah śām ādeś ||

अर्थ

गोरखनाथ की स्तुति अविनाशी अलख निरंजन, भस्म, कुण्डल और नाद धारी शिव-रूप के रूप में है, जिन्हें चौरासी सिद्ध नमन करते हैं, जिन्होंने योग का प्रचार किया और गोपीचन्द व भरथरी को तारा। भक्त जन्म-मरण के बन्धन काटने और ज्ञान देने की प्रार्थना करता है, और अन्तिम पद उनके उपदेश और आशीर्वाद की याचना करते हैं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।